निर्वाण षट्कम मंत्र

निर्वाण षट्कम मंत्र

मनो-बुद्धि-अहंकार धित्तादि नाहं

न ◌ि श्रोत्र-जिह्वे न ◌ि घ्राण-नेत्रे ।

न ◌ि व्योम-भूमी न ते◌ि◌ो न वायु

धि◌ि◌ानं◌ि-रूपं शिवो-हं शिवो-हं ॥ १॥

न ◌ि प्राण-संज्ञो न वै पञ्◌ि-वायु:

न वा सप्त-◌ि◌ातुन वा पञ्◌ि-कोष: ।

न वाक्पाणी-पा◌ि◌ौ न ◌ि◌ोपस्थ पायु:

धि◌ि◌ानं◌ि-रूपं शिवो-हं शिवो-हं ॥ २ ॥

न मे द्वेष-रागौ न मे लोभ-मोहौ

मिं नैव मे नैव मात्सयन-भाव: ।

न ◌िमो न ◌ि◌ाथो न कामो न मोक्ष:

धि◌ि◌ानं◌ि-रूपं शिवो-हं शिवो-हं ॥ ३ ॥

न पुण्यं न पापं न सौख्यं न ◌ि◌ुखं

न मंत्रो न तीथं न वे◌ि◌ा न यज्ञा: ।

अहं भो◌िनं नैव भोज्यं न भोक्ता

धि◌ि◌ानं◌ि-रूपं शिवो-हं शिवो-हं ॥ ४ ॥

न मे मृत्यु न मे ◌ि◌ाततभे◌ि:

पपता नैव मे नैव माता न ◌िन्मो ।

न बन्◌ि◌ुन शमत्र: गुरुनैव शिष्य:

धि◌ि◌ानं◌ि-रूपं शिवो-हं शिवो-हं ॥ ५॥

अहं तनपवनकल्पो तनराकार रूपो

पवभुत्वाच्◌ि सवनत्र सवेजन्◌ियाणां ।

सिा मे समत्त्वं न मुजक्तन बं◌ि:

धि◌ि◌ानं◌ि रूपं शिवो-हं शिवो-हं॥ ६॥

निर्वाण षट्कम मंत्र कव अर्◌ा

मैं मन, बुद्धि, अहंकार या स्मृतत नह ◌ं हू◌ूँ

मैं कान, त्विा, नाक या आंख नह ंहूं,

मैं अंतररक्ष नह ंहूूँ, पृथ्वी नह ंहूूँ, अजनन नह ंहूूँ, िल नह ंहूूँ, वायु नह ंहूूँ,

मैं िेतना और आनंि का स्वरूप हूूँ,

मैं िाश्वत शिव हूूँ॥1॥

....

मैं न तो श्वास हूूँ, न ह पाूँि तत्व,

मैं पिाथन नह ंहूूँ, न ह िेतना केपाूँि कोष

न मैं वाणी हूूँ, न हाथ, न पैर,

मैं िेतना और आनंि का स्वरूप हूूँ,

मैं िाश्वत शिव हूूँ॥2॥

....

मुझमें न कोई पसंि है न नापसंि, न कोई लालि है न कोई भ्रम,

मैं न तो गवन िानता हूूँ, न ईष्यान,

मेरा कोई कतनव्य नह ंहै, न िन, वासना या मोक्ष की कोई इच्छा है,

मैं िेतना और आनंि का स्वरूप हूूँ,

मैं िाश्वत शिव हूूँ॥3॥

....

ना पुण्य ना पाप, ना सुख ना िुुःख,

मुझे ककसी मंत्र, तीथन, िास्त्र या अनुष्ठान की आवश्यकता नह ंहै,

मैं अनुभव नह ंहूूँ, न ह अनुभव स्वयं है,

मैं िेतना और आनंि का स्वरूप हूूँ,

मैं िाश्वत शिव हूूँ॥4॥

....

मुझे न मृत्यु का भय है, न िातत या िमन का,

मेरा कोई पपता नह ंहै, कोई माता नह ंहै, क्योंकक मैं कभी पैिा ह नह ंहुआ,

मैं न कोई ररश्तेिार हूूँ, न कोई शमत्र, न कोई शिक्षक, न कोई छात्र,

मैं िेतना और आनंि का स्वरूप हूूँ,

मैं िाश्वत शिव हूूँ॥5॥

....

मैं द्वैत रदहत हूूँ, मेरा स्वरूप तनराकार है,

मैं सवनत्र पवद्यमान हूूँ, सभी इजन्ियों में व्याप्त हूूँ,

मैं न तो आसक्त हूूँ, न स्वतंत्र हूूँ, न ह बंि हूूँ,

मैं िेतना और आनंि का स्वरूप हूूँ,

मैं िाश्वत शिव हूूँ ll6ll

....